# स्तर-उपयुक्त सीखने के लिए क्षमता-वार समूहीकरण

नवनीत बेदार

*कोविड-19* ने हमारे आसपास की हर चीज़ को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। इनमें भी सबसे ज़्यादा प्रभावित शिक्षा हुई है। हालाँकि *कोविड-19* का असर हमारी अर्थव्यवस्था पर भी बहुत गहरा पड़ा है, लेकिन उससे उबरना अपेक्षाकृत आसान है। शिक्षा तथा बच्चों के सीखने पर पड़ा असर बहुत गहरा है और इसके परिणाम भी कई पीढ़ियों को देखने होंगे। भय और अनिश्चितता के माहौल में स्कूल बन्द हो गए थे और शुरुआती महीनों में संसाधनों की कमी से बच्चों से सम्पर्क कर पाना शिक्षकों के लिए असम्भव-सा हो गया था। लम्बे समय तक स्कूलों के बन्द रहने से बच्चों के सीखने पर दो तरह से प्रभाव पड़ा है : एक, उनका नियमित सीखना न केवल बाधित हुआ, बल्कि रुक-सा गया। दूसरी ओर, स्कूल के नियमित रूप से न चलने के कारण जो कुछ भी वे पहले सीख चुके थे, उसमें से भी कुछ-कुछ भूलने लगे हैं। यहाँ एक विद्यार्थी के हालात से इसे समझने का प्रयास किया जा रहा है।

मार्च 2020 में करीम ने कक्षा-1 पास की थी। इस कक्षा में उसने लगभग 50 तक की गिनती, हिन्दी और अँग्रेज़ी के वर्णों की पहचान और हिन्दी में बिना मात्रा वाले सरल शब्द पहचानना सीख लिया था। वह अपनी पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* के पाठ भी पढ़ लेता था। बिना हासिल वाली जोड़-बाक़ी कर लेता था। कुछ पहाड़े भी उसे याद हो गए थे। वह अपनी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में दिए और उससे इतर आसान टेक्स्ट भी पढ़ लेता था। अँग्रेज़ी में भी कैपिटल और स्मॉल लेटर्स बनाना सीख गया था। वह 'कैट', 'मैट', 'हैट', 'रैट' जैसे शब्द लिख और पढ़ लेता था। सरल शब्दों से बने निर्देश वाक्य जैसे 'सिट डाउन', 'स्टैंड अप', 'कम इन' वग़ैरह समझ लेता था। उसे अँग्रेज़ी की कुछ नर्सरी राइम भी क्रम से याद थीं।

2020-21 के अकादमिक सत्र में, बिना किसी औपचारिक आकलन के वह कक्षा-2 का विद्यार्थी बन गया। स्कूल बन्द होने की वजह से वह स्कूल नहीं आया। अगस्त माह में सामुदायिक केन्द्रों पर जो कुछ पढ़ने-लिखने का काम शुरू हो सका, उसमें भी वह नियमित रूप से शामिल नहीं हो सका। इस बीच उसके गाँव को दो बार कंटेनमेंट जोन घोषित किया गया। इस समय में भी सामुदायिक केन्द्र पर उसका आना नहीं हो सका।

पूरे वर्ष में लगभग दो से तीन माह ही सामुदायिक केन्द्रों पर कक्षाएँ चलीं। इसमें करीम लगभग 20 से 30 फ़ीसद समय ही इस औपचारिक सीखने को दे पाया। जब वह सामुदायिक केन्द्रों पर चलने वाली कक्षा-2 की कक्षाओं में भागीदारी कर रहा था तो उसे एहसास हुआ कि कक्षा-1 में पढ़ी हुई तमाम चीज़ों में से वह काफ़ी कुछ भूल गया है और कक्षा-2 में सिखाई जाने वाली चीज़ें उसके लिए मुश्किल प्रतीत हो रही हैं। करीम के लिए अपने शिक्षक से ऑनलाइन जुड़ना असम्भव था क्योंकि उसके घर में एकमात्र बेसिक फ़ोन था जो उसके पिता के पास रहता था।

करीम जितने दिन भी कक्षा-2 के स्तर के पाठ पढ़ने की कोशिश करता रहा, उसे लगातार महसूस होता रहा कि कक्षा-1 में छूट गई चीज़ें उसे ठीक से समझनी चाहिए थीं। उसे गणित में गुणा-भाग और हासिल वाले जोड़-घटाने के सवाल करने में दिक़्क़त आ रही थी। साथ ही उसे इबारती सवाल समझने में भी मुश्किल हो रही थी। इबारती सवालों की दिक़्क़त केवल गणित की नहीं भाषा की वजह से भी थी।

अप्रैल 2021 में वह कक्षा-3 में प्रमोट किया जा चुका है। कक्षा-1 में सीखे हुए का कक्षा-3 में सीखने के लिए उपयोग कर पाना उसके लिए बेहद मुश्किल है। पढ़ने और समझने की जो अपेक्षा कक्षा-3 की पाठ्यवस्तु करती है उसके लिए करीम पूरी तरीक़े से तैयार नहीं है। अभी भी उसके पास कक्षा-1 के स्तर के कौशल आधे-अधूरे ही हैं। इस दौरान उसकी कक्षा-3 की पाठ्यचर्या में पर्यावरण अध्ययन भी जुड़ गया, जिसमें ऐसी तमाम अवधारणाएँ और विषय शामिल हैं जिनसे उसका ज़्यादा लेना-देना नहीं था।

### शिक्षकों के सामने चुनौतियाँ

शिक्षक के सामने इन कामों में भी तमाम क़िस्म की चुनौतियाँ थीं। जैसे, कई बार किसी गाँव या मोहल्ले का कंटेनमेंट जोन

में बदल जाना; बच्चों के साथ काम करने के लिए समुदाय की असहमति; अभिभावकों का सामुदायिक कक्षाओं में बच्चों को न भेजना आदि भी सामने आती रहीं, फिर भी शिक्षक अपनी तरफ़ से बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करने का हर सम्भव प्रयास करते रहे। लेकिन हम जानते हैं कि किसी एक कक्षा के कक्षा-कक्ष में पाँच-छह घण्टे के सतत और नियमित शिक्षण का कोई विकल्प नहीं हो सकता। कक्षा-कक्ष में हुआ काम बच्चों के बीच आपसी संवाद शुरू करने में और कक्षा-कक्ष का माहौल बच्चों के सीखने में मददगार होता है। कक्षा-कक्ष में चल रही चर्चा में जब कोई बच्चा अपने जीवन के अनुभव साझा करता है तो वह किन्हीं अवधारणाओं को बेहतर तरीक़े से समझने में न केवल ख़ुद की मदद करता है, बल्कि सुनने वाले अन्य बच्चे भी उन अनुभवों से जोड़कर देख पाते हैं और इस प्रक्रिया में वे भी उक्त अवधारणाओं को समझ पाते हैं।

ऊपर जो करीम का उदाहरण लिया गया है वह प्राथमिक स्तर का है, लेकिन आगे जिन अनुभवों की बात की गई है वे उच्च प्राथमिक स्तर के हैं। बहुत-से बच्चे जो मार्च, 2020 में कक्षा-4 में थे, वे अब कक्षा-6 में आ चुके हैं और उनके साथ भी कमोबेश उसी क़िस्म की समस्याएँ सामने आ रही हैं। उनके सीखने में भी उसी तरह के गैप दिखाई दे रहे हैं जैसे हम करीम के केस में देख चुके हैं। हाँ, उनका स्कूल का एक्सपोज़र करीम की तुलना में ज़्यादा ज़रूर है लेकिन भूलने में वे भी कम नहीं हैं। दरअसल, अभी हमें सीधे तौर पर और सतत रूप से काम करने के अवसर उच्च प्राथमिक स्कूल के बच्चों के साथ ही मिल पाए हैं। इसी तरह का काम प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ सामुदायिक केन्द्रों में किया जा रहा है, लेकिन वहाँ अभी भी नियमितता की समस्या है।

### स्कूलों के मेरे अनुभव

मेरे निजी अनुभव दो स्थानों के स्कूलों से जुड़े हुए हैं— एक धमतरी (छत्तीसगढ़) और दूसरा दिनेशपुर, ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)। दोनों जगह पर उच्च प्राथमिक स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ की जा रही हैं।

धमतरी में औपचारिक रूप से स्कूल नहीं खुला, लेकिन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए बच्चों के साथ लगातार काम करने के प्रयास जारी रहे। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के साथ उनके घर या समुदाय में जाकर काम करना, प्रत्येक अवधारणा और पाठ पर आधारित वर्कशीट बनाना, उनको बच्चों तक पहुँचाना और एक नियमित अन्तराल के बाद बच्चों तक पहुँचकर वर्कशीट पर काम करने में आ रही दिक़्क़तों को सुनना, समझना और उनके हल निकालना शिक्षक लगातार करते रहे।

लेकिन इसके बावजूद सत्रह महीने बाद जब स्कूल खुले, तो हमने देखा कि बच्चे अपने पिछले सीखे हुए में से काफ़ी कुछ भूल चुके हैं। यह समस्या उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में भी साफ़ दिख रही है। गणित में आधारभूत संक्रियाएँ, भिन्न, दशमलव और इस तरह की तमाम अवधारणाएँ बच्चे या तो पूरी तरह से भूल चुके हैं या उनमें कुछ सामान्य ग़लतियाँ कर रहे हैं। इसी तरह से भाषा में उनके पढ़ने और लिखने के कौशल में शब्दों की पहचान, लिपि-चिह्नों की पहचान में समस्या जैसे मुद्दे सामने आ रहे हैं। हिन्दी में तो यह थोड़ा कम है, लेकिन अँग्रेज़ी में यह बहुत ज़्यादा है।

### चुनौतियों को पहचानना

इस परिस्थिति से निपटने के लिए भाषा और गणित के लर्निंग आउटकम का एक रूब्रिक बनाने का प्रयास किया गया। इस रूब्रिक के आधार पर यह जाँच की जा सकती थी कि कोई बच्चा किन चीज़ों को सीखने में पास हुआ है, और किन क्षेत्रों में उस पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

इस तरह के व्यवस्थित लर्निंग आउटकम और क्षमताओं के आधार पर बच्चों का बेसलाइन आकलन किया गया। इसमें पाया गया कि लगभग 35% बच्चे आधारभूत क्षमताओं/कौशलों में कहीं-न-कहीं कुछ दिक़्क़त महसूस करते हैं। वे या तो स्तर-उपयुक्त क्षमताओं/कौशलों को विकसित नहीं कर पाए, या लॉकडाउन के दौरान नियमित अभ्यास न होने की वजह से भूल गए। इसके समाधान के लिए बच्चों की क्षमताओं/कौशलों/स्तर और चुनौतियों के आधार पर समूह बनाए गए।

### क्षमता-वार समूहीकरण

हिन्दी भाषा का पहला समूह 11 बच्चों का था। इसमें आधारभूत भाषा कौशल यानी वर्ण-पहचान का संकट और त्वरा (तेज़ी) के साथ पढ़ना-लिखना शामिल था। दूसरा समूह 12 बच्चों का था जिन्हें आधारभूत क्षमताओं की दिक़्क़तें तो नहीं थीं, लेकिन लेखन-कौशल और कुछ बारीक ध्वनि भेद और अर्थ-निर्माण की दिक़्क़तें थीं। इस समूह में ऐसे बच्चे भी शामिल थे जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है और कुछ ध्वनियों का उच्चारण या उनमें फ़र्क़ करना उनके लिए आसान नहीं, जैसे ब और व का फ़र्क़, र और ड़ का फ़र्क़।

इसी तरह गणित में भी आधारभूत गणितीय कौशल जैसे संख्या-पहचान व उनके पैटर्न को समझना, आधारभूत सं क्रियाएँ आदि समस्याओं के साथ एक समूह बना जिसमें 12 बच्चे थे। दूसरा समूह ऐसे बच्चों का था जिनके साथ कक्षा-3,4 और 5 के कौशलों को लेकर चुनौतियाँ थीं। इसके साथ ही इन बच्चों के साथ भाषिक चुनौतियाँ भी थीं, जिनके कारण इबारती सवालों में भी इनको काफ़ी दिक़्क़त आती थी।

इन समूहों के आधार पर ही शिक्षकों ने सीखने-सिखाने की योजना बनाई। उच्च प्राथमिक स्तर के सभी शिक्षक इस काम में जुटे। प्रत्येक शिक्षक फोकस तरीक़े से दो या तीन बच्चों के साथ काम कर रहे थे, ताकि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत दिक़्क़त को समझा जा सके और उसे दूर किया जा सके। इस दौरान एक रोचक बात समझ में आई कि बच्चे बेहद शिद्दत से सीखना चाहते हैं, लेकिन कई बार स्कूल के रूटीन में बहुत सारे बच्चों के बीच में कई कारणों से उनका सीखना सुनिश्चित नहीं हो पाता। पर इसकी बात कभी बाद में।

धमतरी और दिनेशपुर दोनों स्कूलों में समस्याएँ लगभग एक-सी ही थीं। इसलिए दोनों जगह लगभग एक-सी ही पद्धति और तरीक़े इस्तेमाल में लिए गए। इस काम को शुरू हुए लगभग दो माह बीत चुके हैं और इसकी प्रगति का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि लगभग 50 प्रतिशत से ज़्यादा बच्चे अपनी चुनौतियों पर पार पा चुके हैं।

पहले प्रयास में उन 23 बच्चों को शामिल किया गया था जिनके साथ संख्या, स्थानीय मान, आधारभूत संक्रियाएँ; भाषा में अक्षरों की पहचान, पढ़ पाने की क्षमता और बोला हुआ सुनकर लिखने की क्षमता जैसी बेहद आधारभूत चुनौतियाँ थीं। दो माह बाद इनमें से लगभग 17-18 बच्चे या तो चुनौतियों को पार कर चुके हैं या ऐसा करने के अन्तिम पड़ाव पर हैं। कुछ बच्चे अन्य कारणों से अभी भी उन चुनौतियों से जूझ रहे हैं, लेकिन उनमें भी बदलाव देखने में आया है और अपेक्षा है कि वह भी जल्द ही इन क्षमताओं को ग्रहण कर लेंगे।

### सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

भाषा के समूह में 'दिगन्तर'[1] के एक पुराने पैकेज 'सहज पठन' को काम में लिया गया। इसमें 6 कहानियों के इर्द-गिर्द लिखने-पढ़ने पर विविध गतिविधियाँ विकसित की गई हैं। हालाँकि यह पैकेज कक्षा-3, 4 व 5 के विद्यार्थियों के लिए है, लेकिन यहाँ इसे कुछ बदलाव के साथ प्रयोग किया गया। कुछ कहानियाँ बदली गईं, कुछ नई जोड़ी गईं, कुछ अभ्यास भी और जोड़े गए। इसमें देखा गया कि चयनित 11 बच्चों में से अधिकांश बच्चों ने उन कहानियों में रुचि ली। इसके माध्यम से उन्होंने वर्णों और उनकी आकृतियों की पहचान, त्वरा के साथ लिखना और पढ़ना जैसी दक्षताएँ तेज़ी-से हासिल कीं।

इस पैकेज में प्रत्येक कहानी का एक पोस्टर, कहानी के प्रत्येक वाक्य की पट्टी, प्रत्येक शब्द का कार्ड उपयोग में लिए गए। नियमित रूप से पहले कहानी सुनाना, फिर उँगली रखकर पढ़ना, इसके बाद वाक्य-पट्टियों को व्यवस्थित कर कहानी बनाना, शब्द कार्ड को व्यवस्थित कर कहानी बनाना— सभी बच्चों के लिए व्यक्तिगत रूप से लगभग रोज़ की प्रक्रिया रही। इसके साथ ही कहानी के आधार पर वर्कशीट पर काम भी करवाया गया। इसमें कहानी के कुछ शब्दों को हटा दिया गया था और बच्चों से कहानी को पूरा करने के लिए उन शब्दों को रिक्त स्थान में भरने के लिए कहा गया था।

हर कहानी के शब्द-कार्डों से ऐसे वाक्य बनवाए गए, जो कहानी में पहले से मौजूद नहीं थे। ऐसे शब्दों की पहचान करना जो उन्होंने पहली बार सुने या समझे हों, उनको लिखना, शब्दों की ध्वनियों को अलग-अलग पहचानना, उनके लिए प्रयुक्त दृश्य प्रतीकों को जोड़ना और नए शब्द बनाना, यह सारे काम बच्चों ने बख़ूबी रुचि लेकर किए। दो महीने के अन्तराल के बाद 11 में से 8 बच्चे *बरखा* सीरीज के स्तर चार के टेक्स्ट को आसानी-से पढ़ लेते हैं और उन पर आधारित सवालों के जवाब भी दे देते हैं। बचे हुए 3 बच्चों के साथ नियमित रूप से स्कूल न आ पाने और कक्षा में लगातार ध्यान केन्द्रित न कर पाने और भूल जाने की चुनौती बनी हुई है।

भाषा के एक अन्य समूह में 12 बच्चे थे। उनकी समस्याएँ कुछ अलग स्तर की थीं। जैसे जिन बच्चों की मातृभाषा अलग थी उन्हें लिंगबोध के व्याकरण के नियमों का अधिक अभ्यास दिया जाना था। इसके लिए शिक्षक ने एक या दो बच्चों पर फोकस कर उनकी व्यक्तिगत समस्या को अभ्यास और वर्कशीट के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया है। इस प्रयास में भी पिछले दो माह में लगभग 50 फ़ीसद समस्या का समाधान होता प्रतीत होता है।

### संक्षेप में

पिछले दो माह के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि अगर इनपुट स्पष्ट रूप से परिभाषित, योजनाबद्ध और निरन्तर तरीक़े से दिए जाएँ, यानी सीखने में आए गैप्स को पहचान कर उन पर काम किया जाए तो अधिकांश गैप्स जल्द ही भरे जा सकते हैं। कक्षा-6, 7 व 8 के इन बच्चों के साथ आगे की चुनौतियों पर भी योजनाबद्ध रूप से काम जारी है। अपेक्षा है कि इस सत्रान्त तक सभी बच्चे अपने स्तर की क्षमताओं के आसपास ही होंगे।

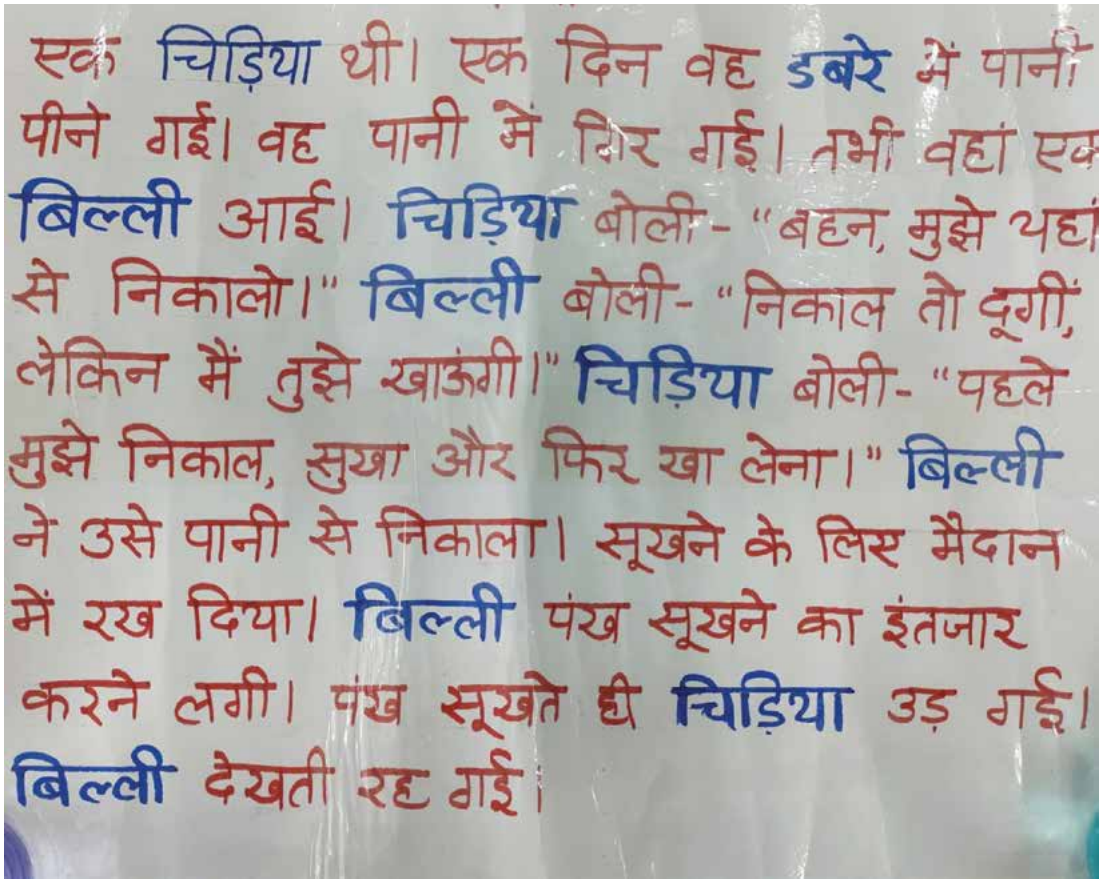


*बच्चों की पहचान छिपाने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।

***आभार***

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर से *पुष्पा बोरा* और *शिप्रा अग्रवाल* ने मेरे साथ मिलकर बच्चों के साथ काम किया और वे इस काम को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

***Endnotes***

i *Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti* is a non-profit organisation in Jaipur working in the field of education since 1978.

**नवनीत बेदार** ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिन्दी में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। वह 1999 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने एनसीईआरटी, नई दिल्ली और दिगन्तर, जयपुर में काम किया है। उन्होंने दून स्कूल में अध्यापन के साथ ही भारती फ़ाउण्डेशन में शिक्षक-प्रशिक्षक के तौर पर भी कार्य किया है। पिछले दस वर्षों से वह अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से भाषा के स्रोत व्यक्ति और ज़िला प्रमुख के तौर पर जुड़े हुए हैं। वर्तमान में वह अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर के प्रिंसीपल हैं। उनसे navneet.bedar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।